

श्रीषेण und °सेन (५. श्री + सेना) m. N. pr. eines Fürsten KATHĀS. 73, 188. 254. 273. eines Astronomen COLBR. Misc. Ess. 2, 386. 388. 407. 476. 480. Verz. d. Cambr. H. 54.

श्रीसंकिता f. Bez. einer best. Saṃhitā Ind. St. 4, 471, 2.

श्रीसंयाम m. N. eines Maṭha RĀGA-TAR. 8, 611.

श्रीसंज्ञ n. Gewürznelke AK. 2, 6, 2, 27. H. 646. — Vgl. श्रीपुष्प.

श्रीसंभूता f. N. der 6ten Nacht im Karmamāsa Ind. St. 10, 296.

श्रीसहोदर m. der leibliche Bruder der Çri so v. a. der Mond (beide brachte das gequirrte Meer hervor) ÇANDĀRTHAK. bei WILSON.

श्रीसुन्दरपुर s. सुन्दरपुर.

श्रीसूक्त n. angeblich das Lied RV. 1, 165 ÇĀṆKH. Br. 26, 9. Verz. d. Oxf. H. 7, b, 12. 398, b, 2.

श्रीसेन s. श्रीषेण.

श्रीस्थल n. N. eines Tempels des Çiva: °माहात्म्य MACK. Coll. 4, 88.

श्रीस्मरणार्पण m. Titel einer Schrift WILSON, Sel. Works 4, 168.

श्रीसर्ज n. copul. comp. von ५. श्री + सर्ज P. 5, 4, 106. Schol. Vop. 6, 7.

श्रीस्वरूप m. N. pr. eines Schülers des Kaitanja WILSON, Sel. Works 1, 159.

श्रीस्ववृषिणी adj. f. das Wesen der Çri besitzend: राधा PAÑĀR. 5, 5, 59.

श्रीस्वामिन् m. N. pr. eines Fürsten RĀGA-TAR. 3, 156. des Vaters von Bhaṭṭi Schol. zu BHATT. 22, 35.

श्रीकट्ट N. pr. einer Stadt (Silhet) WILSON, Sel. Works 4, 153.

श्रीकर adj. (f. श्री) Schönheit u. s. w. raubend, — zu Nichte machend so v. a. Alle an Schönheit übertreffend: RĀDHĀ PAÑĀR. 5, 5, 59.

श्रीकृति m. der hehre Hari (Viṣṇu): श्रीकरोत्स्थानम् wird am 14ten des Kārttika gefeiert As. Res. 3, 265 nach HAUGHTON. °स्तोत्र n. Titel einer Hymne Notices of Skt Mss. 171.

श्रीकर्ष s. कर्ष.

श्रीकृस्तिनी f. Heliotropium indicum AK. 2, 4, 2, 50.

1. शु (अवणो DHĀTUP. 22, 44.), शृणोति P. 3, 1, 74. Vop. 8, 94. शृणुमस् und शृणामस्, शृणुवस् und शृणवस् 95. शृणुवाव, शृणुव, शृणुम (शृणुवस् s. bes.) P. 7, 2, 13. Vop. 8, 57. 95. शृण्वति; शृण्वीति; शृणुतुम्, शृणुता (Vop. 26, 204). Der älteren Sprache gehören folgende Formen an: शृणुधि P. 6, 4, 102. शृणोत Schol. zu P. 6, 3, 133. 7, 1, 45. 3, 1, 78. Vārtt. शृणवम्, शृणोत्, शृणवत्, शृणोतु, शृणोत, शृणुधि P. 6, 4, 102. शृणुतुम्, शृणुवस् (शृणुवस् Pa-dap.) RV. 2, 10, 2. शृणुवन्, शृणवन्, शृणुति (vgl. शृणु) 6, 4, 7. शृणुवाम् ÇAT. Br. शृणवत्, शृणुवाम् (शृणु Padap.) RV. 8, 45, 18. शृणुवाम् 5, 74, 10. शृणुवाम्; शृणव, शृणवाव; शृणवामि. 1) act. hören, erfahren; hören auf, aufmerken; beim Lehrer hören, lernen, studiren: भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम RV. 1, 89, 8. 30, 8. अस्माकं शृणुधो क्वम् 4, 9, 7. वेदविदाङ्कणवच्च विद्वान् 5, 30, 3. 32, 12. रेवत्तं हि त्वं शृणोमि ich höre du seist reich 8, 2, 11. 1, 109, 5. शृणवन्ते अस्य शासम् 68, 9. AIT. Br. 7, 15. VS. 6, 26. AV. 5, 4, 2. 8, 9, 18. पापं श्लोकम् TS. 3, 5, 2. 5, 6, 20. 2. ÇAT. Br. 2, 4, 2, 3. 14, 4, 2, 8. 30, 7, 2, 27. नक्षैव तन्नु शृणुव PAÑĀR. Br. 13, 6, 9. शृणवति (achten hoch Comm.) तुष्टुवानम् 11, 13. वं तद्वित् शृणुमो वयम् MAITREJUP. 1, 2. शृण्वन् so v. a. der in die Lehre zu treten in Begriff ist ĀÇV. Çā. 8, 14, 3. — पठन्, शृणवन् R. 1, 1, 96. इति शृणवाव MBH. 1, 4372. नाश्रीषमिति राजानं सूत वक्ष्यसि संगमे R. GORR. 2, 39, 47. अथ चेन्नमर्ककारात्र शृण्वसि

BHĀG. 18, 58. शृणवत्यवकिता MEGH. 98. कामेनां शेषसे नित्यं श्रोतुमिच्छामि MBH. 3, 2644. आ मूलाच्छ्रोतुमिच्छामि ÇĀK. 14, 19. वक्तुं श्रोतुमशिक्षितः als Erklärung von एडमूक taubstumm AK. 3, 1, 38. श्रुता स्पृष्टा च दृष्टा च भुक्ता घ्राता च यो नरः। न कृष्यति ग्लायति वा M. 2, 98. श्रुता धर्मं विज्ञानाति श्रुता त्यजति दुर्मतिम्। श्रुता ज्ञानमवाप्नोति श्रुता मोक्षमवाप्नुयात् II Spr. 3091. — सुहृत्स्वजनवाक्यानि यथावन्न शृणोति च MBH. 3, 2287. Spr. 3278. (II) 2815. 4907. शृणवति तवेक्षितम् BHĀG. P. 1, 8, 36. सुहृद्वाक्यमिदं शृणु MBH. 3, 2171. 2526. कुलस्त्रीणां मन्त्रभाग्यम् 16619. कथाम् 5, 5944. वचो मम R. 1, 52, 21. 2, 63, 4. KATHĀS. 18, 177. गोदोहकम् vom, die Geschichte des 61, 44. रक्ष्यम् HIT. 37, 3. शृष्टेः शृणुत निर्णयम् M. 5, 110. 9, 19. 11, 145. 12, 2. शृणवाम BHĀG. P. 5, 2, 10. शृणुयात् — प्रणिधीनां च वेष्टितम् M. 7, 223. 8, 76. शृणवतोः सततं गुणान् MBH. 3, 2088. अशृणव कथाः BHĀG. P. 1, 5, 26. प्रविशेश्यशृणोदचः KATHĀS. 18, 211. PAÑĀT. 21, 2. श्रूयात् BHĀG. P. 10, 90, 49. शृणवाव शब्दम् MBH. 1, 6111. 3, 2609. RAGH. 2, 12. KATHĀS. 11, 14. शृणुवतुः स्वनम् MBH. 1, 6119. शृणुवुः 3, 2128. 2854. अश्रीषम् BHĀG. 18, 74. R. 2, 63, 21 (65, 21 GORR.). अश्रीषीस्वं राजधर्मान् MBH. 3, 1396. शृण्वामि मधुरा गिरम् 2431. R. 5, 36, 6. MEGH. 13. ÇĀK. 33, 3. चित्राः कथाः श्रोतुम् MBH. 1, 3, 7618. 3. 2691. RAGH. 1, 10. R. 1, 1, 7. श्रोतुमिच्छामि गङ्गां त्रिपथगां नदीम् erfahren über 36, 11. वचनम् achten auf R. GORR. 2, 120, 23. श्रुवैतान्धमानम् M. 5, 1, 77. 6, 94. MBH. 3, 1815. 2104. 2113. 2436. 2756. 2796. HARIV. 9119. R. 1, 1, 47. 2, 87, 1. 5, 66, 16. RAGH. 12, 13. Spr. 3042. fg. 5092. VARĀH. BRH. S. 47, 28. HIT. 19, 21. VET. in LA. (III) 2, 15. 7, 1. — केनापि पठमानं श्लोकद्वयं शृणवाव hörte recitiren HIT. 4, 7. विगतं तु विदेशस्थं शृणुयाद्यो ह्यनिर्देशम् erfahren, dass M. 5, 75. शृणवाव धृतराष्ट्रमनुषम्। आत्मानं दित्सितं चास्मै पित्रा MBH. 1, 4375. 3, 3016. HARIV. 3371. RĀGA-TAR. 1, 66. यदाश्रीषम् — चित्रं विद्धं लक्ष्यं पातितं वै पृथिव्याम् MBH. 1, 148. fg. श्रुता तु रावणं प्राप्तम् R. 7, 27, 23. Spr. 3044. fg. RAGH. 12, 39. KATHĀS. 7, 28. — mit gen. der Person: अस्माकमित्थं शृणुहि RV. 4, 22, 10. 6, 21, 8. 7, 28, 1. 33, 5. इतस्तु 39, 3. स्तुवतः 8, 24, 14. 1, 37, 13. आचार्यस्य ÇĀṆKH. GRHJ. 2, 12. LĀTJ. 9, 9, 11. इति शृणुव पूर्वेषाम् KENOP. 3. IÇOP. 10. नटस्य P. 1, 4, 29. Schol. किं न शृणोषि मे MBH. 1, 3022. शृणु मे त्वम् — यदाक्यं मृषिका ऽब्रवीत् 5577. 3, 2123. 2475. सा चास्य न शृणोति वै 10327. क्रोशतो न शृणोति मे R. 3, 68, 31. 6, 2, 11. Spr. (II) 1323. mit acc. der Sache und gen. der Person: सर्वं शृणुत तं (गुणं) सर्वं कीर्तयतो मम M. 3, 36. MBH. 3, 2832. हेतुं मे गदतः शृणु 15786. R. 2, 64, 31. MEGH. 13. तदपत्यानि मे शृणु BHĀG. P. 8, 13, 1. dat. st. gen.: शृणु वचो मयम् MBH. 6, 2932. mit abl. der Person: इति श्रुवैव मार्गारात् KATHĀS. 33, 124. 96, 47. mit acc. und abl.: शृणवाव विप्रेभ्यो गान्धारीम् erfuhr von — über MBH. 1, 4371. तच्छ्रुत्वा दमयन्तीसखीगणात् 3, 2109. RAGH. 1, 39. 3, 66. KATHĀS. 2, 25. 45, 54. BHĀG. P. 3, 22, 10. HIT. 19, 3. पार्थमश्रीषीत् — वर्तमानं तत्स्युमे ब्राह्मणेभ्यः MBH. 3, 3084. fg. KATHĀS. 29, 179. st. des einfachen abl. auch °मुखात् (KATHĀS. 18, 195) und सकाशात् (MBH. 3, 1262). mit acc. und instr.: तद्वत् नृपतिः श्रुता हतश्रेष्ठैः R. 1, 70, 8. in der Bed. bitten (nach den Scholl.) BHATT. 8, 77. — 2) med. = act. (im Epos stets nur aus metrischen Rücksichten): शृणुषु सुश्रवस्तमः RV. 1, 131, 7. कर्णाभ्यां भूरि शृणुवे PĀR. GRHJ. 3, 15. शृणुष्विकमना भव MBH. 1, 6520. 13, 484. HARIV. 288. PAÑĀT. 186, 15 (शृण्वेकायमनाः besser ed.